Barcode - 5990010046637
Title - Brajbhas byakaran Ki Ruprekha
Subject - literature
Author - Premnarayan Tandan
Language - hindi
Pages - 52
Publication Year - 1962
Creator - Fast DLI Downloader
https://github.com/cancerian0684/dli-downloader
Barcode EAN.UCC-13

भास के तीन नाटक

[कर्णभार, दूतवाक्य और मध्यमव्यायोग]

अनुवादक

देवपुरस्कार विजेता

श्री हरदयालु सिंह

२००३

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

प्रयाग

श्री हरि मोहन मालवीय
द्वारा, हिन्दुस्तानी एकेडेमी
द्वारा प्रदत्त

❀ श्री ❀

महाकवि भास प्रणीत

'कर्णभार'

[नान्दी के अनन्तर सूत्रधार का प्रवेश]

सूत्रधार—नर करिअरि वेषी विश्व को भ्रान्तिकारी,
नर दनुज सुपर्ण वृन्द में जा बिभूति।
प्रखर करनखाग्रों से विदारा दितीन्द्र,
असुर बल विनाशी विष्णु कल्याण साजै ॥१॥

मैं सज्जन महानुभावों को इस प्रकार सूचना दूँ।

(घूमकर और कुछ सुनकर) अरे मैं तो इस प्रकार सूचना देने में व्यग्र हूँ और इधर कुछ शब्द सा सुनाई पड़ता है। अच्छा देखता हूँ।

(नेपथ्य में)

अरे, कोई अङ्गाधिराज महाराज कर्ण से जाकर निवेदन कर दे।

सूत्रधार—

अच्छा समझ गया।

तुमुल समर आरम्भ में, कुरु अनुचर समुदाय।
नृप आयसु कर जोरि दोउ, कर्णहिं रहे सुनाय ॥२॥

(निष्क्रमण)

(प्रस्तावना)

(भट का प्रवेश)

भट—

अरे! कोई महाराज अङ्गाधिराज से कह दो, कि युद्धकाल आ गया है।

गज तुरंग रथों पै बैठ कै वीर भारी,
कृत बहु हरिनादैं पार्थ के आ अगारी।

समय से—

विद्या-प्रकर्ण-दिन आज रहा वही भी ।।
व्यर्थ-प्रयास-शर शिक्षण में किया है ।
विश्वास दे जननि रोक मुझे लिया है ।।८।।

अरे, शल्यराज ! मेरे अस्त्र प्राप्ति का हाल तो सुनो ।

शल्य—मुझे भी यह वृतान्त सुनने के लिये बड़ी अभिलाषा है ।

कर्ण—पहले मैं भगवान परशुराम के पास गया था ।

शल्य—तो फिर क्या हुआ ।

कर्ण—तब तो,

सौदामिनी - कपिल - उग्र-जटा-कलाप,
धारे प्रभा-वलित चण्ड-कुठार आप ।
छत्रान्त कारि भृगुराम समक्ष जाके,
मैं हो उपस्थित गया शिर को झुका के ।।९।।

शल्य—तो फिर क्या हुआ ।

कर्ण—तब परशुराम ने मुझे आशीर्वाद दिया और पूछा कि तुम यहाँ किसलिये आये हो ?

शल्य—तब फिर ।

कर्ण—तब फिर मैंने कहा कि भगवन् समग्र अस्त्र विद्या प्राप्त करने की इच्छा से आपकी सेवा में पस्थित हुआ हूँ ।

शल्य—तब फिर क्या हुआ।

कर्ण—तो फिर महाराज ने कहा, मैं तो ब्राह्मणों को ही अस्त्र विद्या सिखलाता हूँ, क्षत्रियों को नहीं ।

शल्य—क्षत्रिय-वंश से तो उनका पुराना वैर है, तब फिर क्या हुआ ।

कर्ण—तो फिर मैंने कह दिया कि महाराज ! मैं क्षत्री नहीं हूँ और यह कहकर मैंने उनसे अस्त्र विद्या सीखना आरम्भ कर दिया ।

शल्य—तब फिर क्या हुआ ।

कर्ण—तब फिर बहुत समय के अनन्तर एक बार गुरुवर फल मूल, समिधा, कुश, और प्रसून संचय करने के लिये वन को गये और उनके पीछे मैं भी गया ।

शल्य—तो फिर क्या हुआ ।

बाणाघात-प्रखर-रय से पार्थ को भी हरा के
आता हू मैं हतहरि-बनै कीर्ति को साथ लाके ॥१४॥

शल्यराज ! आइये हम लोग रथ पर सवार हों।

शल्य—अच्छा (दोनों रथ पर सवार होते हैं)

कर्ण—शल्यराज ! जहाँ यह अर्जुन है वहीं मेरे रथ को ले चलो।

(नेपथ्य में)

अरे कर्ण मैं बड़ी भारी भिक्षा माँगता हूँ।

कर्ण—(सुनकर) अरे यह तो बड़ा ही ओजस्वी शब्द है।

ये कोरे द्विजराज हैं नहिं अहो।
श्रीमान् प्रभावी महा।
जाके घोर निनाद के श्रवण से।
हैं बाजि चित्रार्पित।
ह्वै कै निश्चल नेत्र औ श्रुति खड़े।
ग्रीवा, उठाये हुये।
मानो उत्कट धैर्य भी हृदय से, जाता रहा आज है ॥१५॥

उस ब्राह्मण को पुकारो, नहीं-नहीं, मैं ही पुकारता हूँ। भगवन्! इधर आइये।

(ब्राह्मणरूपी इन्द्र का प्रवेश)

इन्द्र—अरे मेघ ! सूर्य्य के साथ घूमकर तुम भी चले जाओ

(कर्ण के पास आकर)

अरे कर्ण ! मैं बड़ी भारी भिक्षा माँगता हूँ।

कर्ण—भगवन् मैं बड़ा धन्य हूँ,
है आज ही यह कृतार्थ हुआ विशेष,
भूपाल जासु पद वन्दन हैं अशेष।
औ विप्र के चरण-रेणु पुनीत शीश।
पादारबिन्द-नत-मस्तक-कर्ण ईश ! ॥१६॥

इन्द्र—(स्वगत्) अब मैं क्या कहूँ, यदि कहूँ कि चिरंजीवी हो तो यह अवश्य दीर्घायु होगा, यदि कुछ नहीं कहता हूँ तो यह मुझे मूढ़ मानकर तिरस्कृत समझेगा। तो इन दोनों विचारों को छोड़कर

कर्ण—क्या, नहीं चाहते महाराज ? अच्छा और सुनिये—
अतुलित स्वर्णराशि आपको प्रदान करता हूँ ।

इन्द्र—(लेकर जाता हूँ कुछ दूर जाकर) नहीं चाहता कर्ण इसे भी नहीं चाहता ।

कर्ण—तो फिर पृथ्वी को जीतकर आपको दूँगा ।
इन्द्र—पृथ्वी को लेकर मैं क्या करूँगा ।
कर्ण—तो फिर अग्निष्टोम यज्ञ का फल देता हूँ ।
इन्द्र—इसको लेकर क्या करूँगा ।
कर्ण—तो अपना शिर देता हूँ ।
इन्द्र—आश्चर्य्य ? आश्चर्य्य ??

कर्ण—भगवन् प्रसन्न हूँ, भय न करें और भी सुनिये—

है अंगजात तनत्राण यहै मदीय ।
त्यों ही सुरासुर समूह अभेदनीय ॥
ये अस्त्र कुण्डल समाहित साम सारी ।
देता तुम्हें भगवते ! रुचि हो तुम्हारी ॥ १॥

इन्द्र—(सहर्ष) दीजिये ? दीजिये ??

कर्ण—(स्वगत्) यही इनकी अभिलाषा है । यह तो अवश्यमेव कपट बुद्धि कृष्ण का प्रपंच है । अच्छा जाने दो, अब तो इस विषय पर विचार करने को भी धिक्कार है, कोई शंका नहीं, (प्रगट) लीजिये, महाराज ! लीजिये ।

शल्य—मत दीजिये, महाराज ! इन्हें मत दीजिये ।
कर्ण—शल्यराज अब रोकना वृथा है, क्योंकि—

शिक्षा विनाश ध्रुव-निश्चय नाश काल,
क्यों वज्रमूल महि पादप आ गिरे हैं ।
है सूखता जल अगाध जहाँ कभी था,
औ दान-यज्ञ-फल व्यर्थ प्रतीत होते ॥२२॥

इसलिये ग्रहण कीजिये (शरीर फाड़कर कुण्डल कवच इन्द्र को देता है)

इन्द्र—लेकर (स्वगत्) अरे यह तो ले लिये, पहिले भी मैंने अर्जुन की विजय के लिये सदा ही इसका समर्थन किया था और

कल्पान्त-सिंधु-रव-कल्प गँभीर घोष ।
है शंख नाद हरि का महिं पार्थ का ये ॥
त्यों आज धर्मराज पराजय क्रोधितात्मा ।
अत्यन्त घोर रण अर्जुन भी करेगा ॥ २४ ॥

शल्यराज ! जहाँ यह अर्जुन है वहीं मेरा रथ ले चलो ।

शल्य०—अच्छा ।

(भरत वाक्य)

रहै अचल सम्पति सदा, नसैं विपति के वृन्द ।
नृप-गुण-युत महिपालमणि, करैं राज स्वच्छन्द ॥ २५ ॥

(दोनों का प्रस्थान)

[कर्ण भार समाप्त]

चूर्णिका

छन्द १

नरकरिअरिवेषी=नरसिंहभगवान। सुपर्ण=गरुण। प्रखर करनखाग्रों से=पैने नाखूनों से॥ दितीन्द्र=हिरण्यकश्यपु।

छन्द २

तुमुल समर आरम्भ में=भयंकर युद्ध का श्रीगणेश होते ही।

छन्द ३

कृत बहु करिनादै=बार बार सिंहनाद करने वाले। प्रथित भुवन योधा=विश्व विख्यात वीर। नागकेतु=जिसकी रथध्वजा में सर्प का चिह्न बना हुआ है।

छन्द ४

उग्रादित्तीविशद अति ही=अत्यन्त उग्रकान्ति से युक्त॥ ग्रीष्म ज्वाला वलित=ग्रीष्मऋतु की प्रचण्ड दीप्ति से युक्त॥ मन्दाभा=क्षीण-प्रभा।

छन्द ५

प्राणशेष नर नायक=वे राजा लोग जिनके प्राण किसी प्रकार से बच गये हैं। शरघनावलि=बाणों की घोर वर्षा।

छन्द ६

अस्त्रप्रहार क्षतविक्षत सैनिकों में=आयुध आघात से जिसमें योधाओं के शरीर कट गये हैं। महाहवों में=घोर युद्धों में। की नाश कल्प=यमराज के समान।

छन्द ९

सौदामिनी कपिल उग्रजटा कलाप=विद्युत्छटा के समान पिंगल जूट धारण करने वाले। चन्द्रकुठार=घोर परशु। छत्रान्तकारि=क्षत्रियों का अन्त करने वाले। समक्ष=सामने।

छन्द १०

जघन जुग=दोनों जाघों को। वज्रकीट=एक राजा विशेष जिसको परशुराम कीड़ा बनाकर अपनी जटाओं में रखते थे। समरमहि में=युद्ध क्षेत्र में॥ व्यर्थ हों अस्त्र तेरे=तुम्हारे अस्त्र काम न दें।

छन्द २०

गण्डस्थली स्रवित शाश्वत दान रेखा=जिनके कपोलों पर सदा ही मद जल बहता रहता है।

छन्द २१

अंगजात तन त्राण=जन्म से ही प्राप्त हुआ कवच।

छन्द २२

शिक्षा विनाश ध्रुव निश्चय विनाश काल=जब मनुष्य का अन्त-काल आ जाता है तो पहिले उसकी शिक्षा निश्चय रूप से नष्ट हो जाती है। वद्य मूल पादप=बड़े मजबूत जड़ वाले वृक्ष।

छन्द २३

देव वारण प्रणोदन रुक्ष पाणि=ऐरावत के हांकने से जिसके हाथ कर्कश हो गये हों।

छन्द २४

कल्पान्त सिन्धु रव कल्प गंभीर घोष=प्रलय काल के समुद्र के समान घोर नाद करने वाला। धर्मराज पराजय क्रोधितात्मा=धर्मराज की हार से विशेष क्रोध करने वाला।

—:❀:—

कार से आच्छादित करके घटोत्कच दुर्योधन का वध करने के लिये प्रलयकाण्ड उपस्थित किये हुये थे। अपना अन्त जानकर दुर्योधन ने कर्ण को सहायता के लिये पुकारा और उनका आग्रह देखकर कर्ण ने इसी विमला शक्ति से घटोत्कच का बध किया। उसके मारे जाते ही आसुरी माया का अन्त हो गया।

कर्णभार के कथानक, और उसकी अन्तर्कथाओं का यही संक्षिप्तसार है।

❀ श्री ❀

महाकवि भास प्रणीत

'दूत बाक्य'

(नान्दी के अनन्तर सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार—

त्रैलोक्य में अखिल मंगल मोदकारी,
दीन्हों गिराय नमुची नभ से अगारी।
सूक्ष्मासण-नख-प्रभा बर शोभ धारी,
रक्षा करै चरण वामन का तुम्हारी ॥१॥

तो फिर सज्जन महाशयों से इस प्रकार निवेदन करूँ। अरे! मैं तो इन्हें इस प्रकार सूचना दे रहा हूँ। और इधर मेरे कानों में कोई शब्द सा सुनाई पड़ता है। अच्छा देखता हूँ।

(नेपथ्य में)

अरे द्वारपालको! महाराज कौरवेश्वर की आज्ञा है।

सूत्रधार—अच्छा इसे तो मैं जानता हूँ।

कौरव को पाण्डवन सों, विषम विरोधहिं जानि,
रचत मंत्रशाला सचिव, कुरुपति आयसु मानि ॥२॥

(प्रस्थान)

(स्थापना)

(कंचुकी का प्रवेश)

कंचुकी—अरे द्वारपालो! महाराज कौरवेश्वर ने आज्ञा दी है कि आज समग्र राजाओं के साथ मिलकर वे कुछ मंत्रणा करना चाहते हैं, इसलिये उन सबों को बुला कर इकट्ठा करो। (घूमकर और देखकर) अरे यह तो स्वयं कौरवेश्वर ही आ रहे हैं।

है श्याम गात्र बर श्वेत दुकूलधारी,
औ छत्र चामर लगे कृत अंगराग।
है शोभता मणि-विभूषण से तथैव,
ज्यों तारिकावलि-घिरा नभ में मयंक ॥३॥

मेरी ग्यारह अक्षोहणीं सेना एकत्रित है, कौन इसका अधिनायक बनने की क्षमता रखता है।

आप दोनों क्या कहते हैं ? पूज्य मामा जी, इस विषय पर अपना परामर्श देंगे। मामा जी, क्या कहते हैं ? जब पूजनीय भीष्म पितामह स्वयं मंत्रशाला में उपस्थित हैं, तो उनके रहते हुये और कौन सेना नायक बनाया जा सकता है।

मामा ने ठीक कहा ! ऐसा होगा ! भीष्म पितामह ही बलाधिपति बनाये जायँ।

सेना का घोष भारी, पटह ध्वनि तथा
शंख का नाद भी हो,
क्यों ही चण्डानिलों से, प्रमथित यहाँ
सिंधु—निस्वान सा हो।
श्रीमान गंगा तनै के, शिर पर गिरे
स्नान के पुण्य पाथ,
औ वैरी वृन्द के भी, हृदय खस पड़ें
वारि की धार साथ ॥५॥

(प्रवेश)

कंचुकी—जय हो महाराज ! जय हो ! पाण्डव सेना के स्कन्धावार से पुरुषोत्तम नारायण राजदूत बन कर आये हैं।

दुर्योधन—अरे ! क्या कहते हो। अरे ! क्या यह वही कंस का नौकर ही तुम्हारा पुरुषोत्तम है ! जो कभी रस्सी से बाँधा गया था इसी ग्वाले का नाम पुरुषोत्तम है ! अरे, तुम लोग इसी को पुरुषोत्तम मानते हो, जिसका राज्य, यश और भोग सभी कुछ जरासन्ध ने छीन लिया था। शोक है, राजाओं के निकट रहने वाले भृत्यों का ऐसा आचरण। इसके वाक्य बड़े ही प्रगल्भ हैं। जाओ दूर हो।

कंचुकी—महाराज प्रसन्न हों। संभ्रम में आकर मैं भृत्य सुलभ आचरण ही भूल गया।

(पैरों पर गिरता है)

दुर्योधन—संभ्रम ! यह तो मनुष्य का स्वभाव ही है। कोई बात नहीं, उठो उठो।

कंचुकी—महाराज ! आप का बड़ा अनुग्रह है।

में इस प्रकार अपमानित देखने से रोषावेष में आकर खम्भों को उठाने के फेर में है, ये धर्मराज हैं।

सत्य, धर्म, अरु लोभयुत, द्यूतक्रिया से भ्रांत।
क्रोध कलित भीमहि करत सैननि धर्मज सान्त ॥८॥

यह धनञ्जय है।

है रोष से अरुण दृग फड़कँऽधरोष्ठ,
औ-फूस-तुल्य अरि मण्डल को गिनै है।
राजन्यवर्ग - निधनार्थ महा - हुलास,
है खींचता प्रशम गाण्डिव मौर्वी को ॥९॥

ये धर्मराज पार्थ को निवारण कर रहे हैं। ये दोनों माद्रि नन्दन हैं।

कटि परिकर बाँधे चर्म औ खड्गपाणि,
मुख अरुण किये औ काटते होंठ जाते।
तजि स्वमरण भै को बन्धु पै ये लगे यों,
करि अरि पर दौड़ें शाव ज्यों दो मृगों के ॥१०॥

यह धर्मराज नकुल और सहदेव के पास आकर उन दोनों को निवारण कर रहा है।

हूँ नीचे मैं कुमति विभ्रम में फँसा हूँ,
हो नीतिमान तुम रोषहिं त्याग दो तो।
द्यूताधिकार-अपमान नहीं सहोगे,
तो विज्ञ धृष्ट अरु नीच, तुम्हें कहेंगे ॥११॥

ये मातुल गान्धाराधिराज हैं।

अक्षक्रिया कुशल दर्पित हास हो से,
संकोचता अरि-विनोद स्वकीर्ति से है।
त्यों मंच से बिलखती लख द्रौपदी को,
तीखे निहारि महि पै पुनि रेख खींचे ॥१२॥

ये तो गुरुवर द्रोणाचार्य और पितामह भीष्म पाञ्चाली को इस प्रकार देखकर व्रीड़ा-विनम्र-मुख होकर अपने मुँह पर कपड़ा डाले हुये हैं। चित्र में कैसे सुन्दर रंग दिये गये हैं इसकी भाव भंगिमा भी अपूर्व ही है और युक्त लेखिता का क्या कहना है। यह चित्रपट बड़ी ही

मन्दुरा में लसैं बांके तुरंग,
तथा करि-बृन्द अनेक सजाये ।
पै निज बन्धुन के अपमान सों,
ये सब वैभव जैहैं नसाये ॥ १५ ॥

अरे, कटु-वादी, शठ, निर्दयी, गुण-द्वेषी, महराज ।
मोहिं निरखि यह अन्धसुत, नहिं करिहै कछु काज ॥१६॥

अरे बादरायण, क्या मैं आऊँ ?

कंचुकी—अब पद्मनाभ अवश्य पधारैं ।

वासुदेव—(आकर) अरे यह तो सारा राजमंडल मुझे देखकर संभ्रांत हो गया । ऐसा संभ्रम मत करैं । आप लोग बैठ जायें ।

दुर्योधन—तुम लोग केशव को देखकर इस प्रकार संभ्रांत क्यों हो गये ? संभ्रम मत करो । क्या तुम्हें वह दंड आज्ञा विस्मृत हो गई, जिसे पहिले सुना दिया गया था ।

वासुदेव—(पास जाकर) कहो दुर्योधन क्या हाल है ?

दुर्योधन—(सिंहासन से गिर कर, स्वगत) केशव निश्चय ही आ गया ।

कै उछाह सों सुदृढ़ मति, बैठो आसन आय ।
हरि प्रभाव ने मोहि पै, बरबस दियो हटाय ॥१७॥

अरे यह दूत पूरा मायावी निकला । (प्रकट) अरे दूत, यहाँ बैठो ।

वासुदेव—गुरुवर द्रोणाचार्य्य, आप यहीं समासीन हों । भीष्म आदिक राजवृन्द, आप लोग भी बैठ जायें । मैं भी बैठता हूँ । (बैठकर) अरे यह चित्रपट तो दर्शनीय ही है । परन्तु जाने दो । इसमें तो कृष्णा का केशकर्षण और अम्बरहरण दिखलाया गया है ।

ये ही सुयोधन स्ववंशज का पराभव,
है मानता अतुल विक्रम आत्मनीत ।
या लोक में कहहु को निज दोष को भी,
बैठे सभा महं नृशंत्य सबै जतावै ॥१८॥

अरे इस चित्रपट को हटा ले जाओ ।

दुर्योधन—बादरायण ! इस चित्रपट को दूर करो ।

कञ्चुकी—महाराज, जैसा कहें । (चित्रपट को हटाता है ।)

भीख मैं राज मिलै न कहूँ,
अरु मांगे न पावत ताहि भिखारी।
साध जो होय सिंहासन की,
निज पौरुष वै दरसावैं अगारी।
कै तपसीन के साथ करैं,
बनवास इती सिख मानि हमारी ॥२४॥

वासुदेव—अरे दुर्योधन, अपने आदमियों से ऐसे परुष वाक्य नहीं कहे जाते।

पूर्व पुण्य संचयनि सों, नृप प्रिय लहि जग माहिं।
जिन बाँध्यों निज बंधु को, तिन स्रम कियो वृथाहि ॥२५॥

दुर्योधन—अरे दूत,

तुम निज मातुल कंस पै, कियो दया जब नाहिं।
कहाँ भयो नहिं मोहिं दया, नित अपकारन माहिं ॥२६॥

वासुदेव—मेरे ऊपर दोषारोपण करना व्यर्थ है।

सुत वियोग पीड़ित जननि, कहं दीन्हों अति त्रास।
बांधि उग्रसेनहि भयो, आपु मृत्यु को ग्रास ॥२७॥

दुर्योधन—तुमने कंस को अच्छी तरह से धोखा दिया है। यह भी कोई वीरता है, देखो

जामातृ के निधन से अति रुष्ट होके,
कीन्हीं जबै मगध राज हुती चढ़ाई।
तो मान भीति रण अंगन से भगे थे,
ये उग्र साहस कहाँ तब था तुम्हारा ॥२८॥

वासुदेव—अरे दुर्योधन, नीति के जानने वाले देश काल की अवस्था को देखकर अपना पराक्रम प्रदर्शित करते हैं। अब इस प्रकार के परिहास का अन्त कर दो और अपना कार्य्य करो।

बन्धु नेह कीजै सदा, भूले अवगुन ग्राम।
तिन सों प्रेम दृढ़ाइबो, करै श्रेय सब ठाम ॥२९॥

दुर्योधन—

देव सुवन संग मनुज सुत, करिहैं कैसे प्रीति।
चुप साधो अब कृष्ण जनि, हमहिं सिखावौ नीति ॥३०॥

वासुदेव—(स्वगत)

गो वृष ह्य तिय पूतना, मारे मल्ल अनेकु ।
साधुन सौं बढ़ि बढ़ि वदन, मूढ़ लजात न नेकु॥

वासुदेव—अरे दुर्योधन ! तुम तो हमारा अपमान करने पर तुले हुये हो ।

दुर्योधन—ठीक तो है—

वासुदेव—अब मैं जाता हूँ ?

दुर्योधन—जाओ जाओ ब्रज को जाओ, तुम्हारा शरीर पशुओं के खुरों से खोदी हुई रेणु से अब भी कलुषित है । तुमने व्यर्थ ही के लिये इतना समय नष्ट किया ।

वासुदेव—ऐसा ? परन्तु हम युधिष्ठिर का सन्देश सुनाये बिना जाना तो नहीं चाहते, इसलिये उसे आप सुन लें,

दुर्योधन—तुम से बातचीत करना व्यर्थ है ।

शिर पर यह मेरे शोभता आत पत्र,
द्विजवर कर पानी से हुआ है ऽभिषेक ।
अखिल नृपति तोहै माथ मोको नवाता ।
तुम सरिस जनों से बात भी मैं करूँ क्या ॥३७॥

वासुदेव—अरे यह दुर्योधन तो अच्छी तरह बात भी नहीं करता—

केकर, पिंगल, काक, शठ, करत न बन्धु सनेह ।
तेरे हित कुरुवंश यह, ह्वै जैसे सब खेह ॥३८॥

अरे राजाओ हम जाते हैं—

दुर्योधन—केशव कैसे जाने पावेगा । दुःशासन दुःमर्शण, दुर्बुधि, दुष्टेश्वर, इस केशव को अभी बाँध क्यों नहीं लेते ? देखो इसने दूत सुलभ शिष्टाचार का उल्लंघन किया है ।

अरे दुःशासन ? क्या तुम इसको बाँध नहीं सकते ?

करि तुरगहि मारा कंस को भी पछाड़ा,
पशुप कुलज है ही दूत का कृत्य भूला ।
सब भुज बल देखा या सभा के समक्ष,
बहु कटु वचभाषी को अभी बाँध लो तो ॥३९॥

यह तो नहीं बाँध सकता अरे मामा तुम्हीं केशव को बाँध लो,

(सुदर्शन का प्रवेश)

सुदर्शन—अरे महाराज ? मैं आ गया।

सुनकर कमला के नाथ के बैन बाँके,
घन पटल हटा के मैं अभी आ रहा हूँ।
किस पर प्रभु कोपे आज वैकुण्ठनाथ,
अरु शिर किसका मैं शीघ्र ही काट डालूँ ॥४२॥

भगवान नारायण कहाँ हैं ?

हैं अव्यक्त अचिन्त्य वपु, लोकन रक्षन काज,
शत्रु सेन नासन धरत, किते रूप महराज ॥४३॥

(देखकर) अरे यह तो स्वयं भगवान हस्तिनापूर के राजद्वार पर दूत रूप से आ गये हैं, यह जल कहाँ से आया, अरे भगवती व्योमगंगे ? यह तो जल की फुहार गिर रही है।

(आचमन करके और आगे जाकर)

जय हो (भगवान नारायण को प्रणाम करता है)

भगवान—सुदर्शन तुम्हारा पराक्रम कोई रोक न सके।

सुदर्शन—महाराज आपकी बड़ी कृपा है।

वासुदेव—बड़े सन्तोष की बात है कि तुम आवश्यकता के समय पर आये।

सुदर्शन—कहिये महाराज कौन सा काम है मुझे आज्ञा तो दीजिये।

लौटूं कहो सकल मन्दर मेरु लाके,
संक्षुब्ध भी कर सकूँ मकरालयों को।
डालूँ अभी अवनि तारक मंडली को,
मोको अशक्य अब नाथ कछू नहीं है ॥४४॥

वासुदेव—अरे सुदर्शन ! इधर आओ। अरे दुर्योधन—

लवण जलधि में या मेरु की कन्दरा में,
ग्रह गण पथ में या वायु के मार्ग जाओ।
मम भुज बल से प्राप्त कै वेग वेश,
तव हित यह होगा काल का चक्र आज ॥४५॥

सुदर्शन—अरे दुष्ट दुर्योधन ? ठहर जा, (फिर सोचकर) भगवन् नारायण प्रसन्न हों।

अरे नन्दक ? भगवान नारायण का क्रोध शान्त हो गया इस लिये अपने स्थान को चले जाओ, अच्छा जाता हूँ । यह तो भगवान के आयुध श्रेष्ठ हैं ।

है यह नन्दन नाम को खड्गा,
मयूखनि भानुप्रभा को लजावे
त्यों हो कुमोदकी नाम गदा,
जो सुरारिन हूँ के विरूथ नसावे ।
है यह शारङ्ग नाम को चाप,
प्रलै घन घोष सों रव उपजावे ।
त्यों ही गंभीर निनाद, मयंक,
समान यहै पंचजन्य कहावै ॥५१॥
हे चाप कौमोदकि शंख खड्ग,
दैत्यान्तकारी हेतवाह रूप ।
है शान्त नारायन या समै तो,
स्वस्थान को आप सभी पधारैं ॥५२॥

अच्छा ये सब गये, मैं भी जाता हूँ, हवा बड़ी वेग से चलने लगी, सूर्य भी बड़े उग्रता के साथ तपने लगे, पर्वत हिलने लगे, समुद्र संक्षुब्ध हो उठे, वृक्षमाला गिरने लगी, मेघावली इधर उधर हो गई, वासुकी आदिक भुजंग राज भी सहम गये, अरे यह क्या है ? भगवान के वाहन श्रेष्ठ पन्नगारि यहाँ आ पहुँचे ।

असुर सुर गणों को कष्ट से जो मिला था ।
उस अमृतहिं छीन्यो मातृ के मोक्षणार्थ ।
अरु यह बरदानैं कृष्ण जी को दिया था ।
तुमहि हम रहेंगे पीठ ही पै चढ़ाये ॥५३॥

हे ? कश्यप के प्रिय पुत्र पक्षिराज देवाधिदेव भगवान नारायण का क्रोध शान्त हो गया । अपने स्थान को जाओ, यह तो गये, मैं भी जाता हूँ ।

ये सिद्ध किन्नर खड़े नभमार्ग में हैं ।
औ देववृन्द हिलते जिनके किरीट ॥
ये थे विवर्ण सुन क्रोधित चक्रपाणि ।
पै शान्त रोष निज आलय जा रहे हैं ॥५४॥

❀ श्री ❀

महाकवि भास प्रणीत

'मध्यमव्यायोग'

का

अनुवाद

(नान्दी के अनन्तर सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार—

दैत्याङ्गना-हृदय-पीड़न कृष्ण पाद,
इन्दी वरामल-कृपाण - समान-आभ ।
जो व्योम सिन्धु महि नीलम केशधारी,
त्रैलोक्यनाथ-पग ताप हरै तुम्हारी ॥१॥

मैं सज्जन महानुभावों को इस प्रकार सूचित करता हूँ । परन्तु मैं तो इधर विज्ञापन करने में व्यग्र हूँ, और उधर कुछ शब्द सा सुनाई पड़ता है, अच्छा देखता हूँ ।

(नेपथ्य में)

अरे ! पिता जी यह कौन आ रहा है ?

सूत्रधार—अच्छा समझ गया ।

'हे' कहि यह बोलत अतः, है द्विज संशय नाहिं ।
अति निशंक पापी कोऊ, त्रास देत है याहि ॥२॥

(नेपथ्य में)

पिता जी महाराज यह कौन है ?

सूत्रधार—अब तो भलीभाँति समझ में आ गया । यह तो मध्यम पाण्डव भीमसेन का पुत्र है, और हिडम्बा रूपा अरणी से उत्पन्न हुआ राक्षसाग्नि है । यह उस ब्राह्मण को त्रास दे रहा है, जिसने अभी तक किसी से बैर किया ही नहीं । पुत्र कलत्र युक्त ? ब्राह्मण का वृत्तान्त बड़ा ही दुःखद है, यहाँ पर—

है नारि औ तरुण पुत्र न साथ वृद्ध,
जो यातुधान-परिपीड़ित हो रहा है ।

ब्राह्मणी—आर्य ! यह कौन है, जो हमें इस प्रकार सन्तप्त कर रहा है ?

घटोत्कच—अरे ब्राह्मण, ठहरो, ठहरो ?

मों त्रास से गलित धैर्य हुआ तुम्हारा,
रक्षा त्रिया तनुज की तुम से न होगी।
ज्यों तद्विपक्ष पवनोद्धत क्रोध बह्नि,
तीव्र-प्रयाण-भुजगेन्द्र सकै न भाग ॥८॥

हे ब्राह्मण ! मत भागो, मत भागो।

वृद्ध—ब्राह्मणी ! भयभीत मत हो, पुत्रो ! तुम भी न डरो। इसकी वाणी बड़ी ही विचारपूर्ण है।

घटोत्कच—अरे बड़े ही कष्ट का प्रसङ्ग है।

हैं पूजनीय जग में द्विज मानता हूँ,
तो भी लगा अधम निन्दित कार्य्य में हूँ।
पोछा करूँ परम निर्दय ब्राह्मणों का,
मा का आदेश लहि शंक सबै विहाय ॥९॥

वृद्ध—अरे ब्राह्मणी, क्या तुम्हें पूजनीय जलक्लिन्न मुनि की बात नहीं याद है ? उन्होंने पहिले ही से कह रक्खा था कि इस बन में राक्षस भरे पड़े हैं, इसलिये बहुत सोच समझकर जाना, अब तो यही भय आ गया।

ब्राह्मणी—इस समय आर्यपुत्र का मुख मण्डल मलीन क्यों हो रहा है ?

वृद्ध—यह सब मेरा दुर्भाग्य है, मैं क्या करूँ ?

ब्राह्मणी—किसी को तार स्वर से पुकारिये।

पहिला पुत्र—माता जी हम किसको पुकार ?

है शून्य कानन नितान्त तमावकीर्ण,
मार्गावरोध गिरि पादप ने किया है।
औ पक्षि स्वायद्-समाकुल मार्ग भी है,
तो भी तपोधन यहाँ करते निवास ॥१०॥

वृद्ध—ब्राह्मणी ! भयभीत न हो। यह भूमि मनुष्यों के रहने योग्य है। मेरा त्रास जाता रहा। मेरा अनुमान तो यह है कि यहाँ से थोड़ी दूर पाण्डवों का आश्रमगृह होगा, पाण्डव तो—

पति देवता सुतीय संग,
रक्षहु निज सुत द्वेक।
बहुरि बलाबल समुझि निज,
छांड़ि देहु सुत एक ॥१२॥

वृद्ध—अरे नीच राक्षस ! क्या मैं ब्राह्मण नहीं हूँ ?

पढ्यौं वेद चारौ, भयौं,
बूढ़ौ, हौं द्विज जाति।
दै निज सुत नरभक्ष कहिं,
लहौं शान्ति केहि भाँति ॥१३॥

घटोत्कच—जो ह्वै कातर विप्रवर,
देहौ पुत्र न एक।
तौ सब कुटुम्ब विनाश मैं,
लगिहैं बार न नेक ॥१४॥

वृद्ध—ब्राह्मणी ? अब तो मैंने यही निश्चय कर लिया है—

कृतकृत्य शरीर कृश, भयो वृद्धता पाय।
सुतहित राक्स-अनल महँ, याहि होमिहौं जाय ॥१५॥

ब्राह्मणी—आर्य ! ऐसा आप न करें, मैं पातिव्रत धर्म को भली भाँति जानती हूँ, मैंने इस शरीर का फल पा लिया और इससे आप की तथा इस परिवार की रक्षा करना चाहती हूँ—

घटोत्कच—मेरी माता को स्त्रियों का माँस प्रिय नहीं है—

वृद्ध—अच्छा, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।

घटोत्कच—नहीं, तुम वृद्ध हो, तुम भी जाओ।

प्रथम०—पिता जी, मैं भी कुछ कहूँ ?

वृद्ध—कहो, पुत्र कहो क्यों न ?

प्रथम०—निज प्राणन दै गुरुहिं अरु, वृद्धहु लेहुँ बचाय।
द्विजकुल रक्षा हेतु मोहिं, आप लीजिये खाय ॥१६॥

द्वितीय०—आर्य ? आप ऐसा न कहें।

जेठो सुत कुल को तिलक, जननि जनक को प्रीय।
याते मैं ही जात हौं, जेठ टेक धरि हीय ॥१६॥

तृतीय०—आर्य ! आप ऐसा न कहें ?

घटोत्कच—कहो, जल्दी कहो।

द्वितीय—इस बन में एक तड़ाग सा दीख पड़ता है अब तो मेरा परलोक का प्रस्थान ही है इसलिये, कहो तो जल पान करके अपनी प्यास बुझा लूं ?

घटोत्कच—तुम बड़े साहसी हो ? जाओ परन्तु जल्दी आना, क्योंकि माता का भोजन काल बीता जा रहा है।

द्वितीय—अरे पिता जी ! मैं जा रहा हूँ।

(प्रस्थान)

वृद्ध—अरे हम लोग लुट गये ! लुट गये !!

त्रय शृङ्गनि युत रह्यो यह, वंश महोधर मोर।
मध्य शृङ्ग टूटत भयो, मम हिय दुःख अथोर ॥२३॥

अरे पुत्र ! क्या जाते ही हो ?

तरुण तरुण ताके योग्य है देह कान्ति,
नियम जम पढ़े से बुद्धि है शुद्ध चारु।
करिवर रद लग्न वृक्ष पुष्पालि तुल्य,
किमि अभिमुपकृत्य जा रहे हो कुमार ॥२४॥

घटोत्कच—अरे ब्राह्मण कुमार तुमने तो बड़ी देर लगाई, माता की आहार वेला बीती जा रही है अब क्या करूँ, अच्छा समझ गया—अरे ब्राह्मण अपने पुत्र को बुलाओ—

वृद्ध—अरे भाई तुम्हारे वाक्य तो राक्षसों के वाक्यों से भी अधिक निष्ठुर हैं।

घटोत्कच—क्यों रुष्ट हो गये महाराज ? आप शान्त हों ! क्षमा कीजिये, क्षमा कीजिये !

यह तो मेरा निसर्ग-जाति दोष है, अच्छा तुम्हारे पुत्र का क्या नाम है ?

वृद्ध—यह भी नहीं सुन सकता हूँ।

घटोत्कच—ठीक ही है, ब्राह्मण कुमार ! तुम्हारे भाई का क्या नाम है ?

प्रथम—उस तपस्वी का नाम मध्यम है।

घटोत्कच—तब तो यह नाम उसके अनुरूप ही है, अच्छा मैं ही उसे बुलाता हूँ, अरे, मध्यम जल्दी आओ, जल्दी आओ।

है विष्णु सा विकच-अम्बुज-पद्म नेत्र,
औ बन्धु सा अमित आनन्द दे रहा है ॥२७॥

अरे मध्यम ! मैं तुमको पुकार रहा था।

भीमसेन—इसी से तो मैं आ गया हूँ।

घटोत्कच—क्या आप ही मध्यम हैं ?

भीमसेन—और दूसरा कौन हो सकता है।

मध्यम अहौं अवध्य मैं,
मध्यम बीरन माहि।
मध्यम भूतल मैं अहौं,
मध्यम बंधुन मांहि ॥२८॥

घटोत्कच होगे इससे क्या ?

भीमसेन—और भी।

मध्यम पांचो तत्व में,
मध्यम राजन मांहि।
जन्महु मध्यम भयों,
मध्यम काजन मांहि ॥२९॥

वृद्ध—

बार बार मध्यम कहत,
है यह अवसि भीम।
ज्यावन हित हम कहँ इतै,
आयो धैर्य असीम ॥३०॥

(प्रवेश करके)

मध्यम— देव लोक दुरलभ सुभग,
पद्माकर जल सेत।
पद्मपत्र उज्ज्वल सलिल,
निज कर निज हित देत ॥३१॥

(जाकर) अरे महापुरुष मैं तो आ गया।

घटोत्कच—आ गये अरे मध्यम ! इधर आओ वृद्ध (भीम को पाकर) अरे मध्यम ! ब्राह्मण कुल की रक्षा करो।

भीमसेन—भयभीत मत हो, यह मध्यम आपको प्रणाम करता है।

मो बंधुन के गुनन को है निश्चय यह चोर।
बल विलोक अभिमन्यु कहँ है सुमिरत मन मोर ॥३५॥

प्रगट—अरे पुरुष, इसे छोड़ दो।

घटोत्कच—मैं तो इसे न छोड़ूँगा।

"छोड़ो यहि" विश्वास करि कहत पिता जो आय,
तौ हूँ नहिं यहि छोड़तो जननी आयसु पाय ॥३६॥

(भीमसेन स्वगत) अरे यह इसके माता की आज्ञा है? तब तो यह मातृ भक्त भी होगा।

देवन हूँ को देव है, जग में जननि हमेश।
हमहूँ यहि पदको लह्यो, मानि मातु आदेश ॥३७॥

(प्रकट, हे पुरुष तुमसे कुछ पूंछना है)

घटोत्कच—अच्छा कहो क्या कहते हो?

भीमसेन—आप की माता का नाम क्या है?

घटोत्कच—उनका नाम हिडम्बा राक्षसी?

भीम पाण्डु कुल दीप ने, कीन्ह्यो ताहि सनाथ।
अम्बर कहँ भूषित करत, ज्यों जामिनि निशि नाथ ॥३८॥

भीमसेन—(स्वगत) ऐसा? यह हिडम्बा का पुत्र है? तब तो इसे ऐसा स्वाभिमानी होना ही चाहिये।

आकृति बल अरु बस सब, हैं मम कुल अनुरूप।
पै निर्दय हिय को कलुक, जानि परत नहिं रूप ॥३९॥

(प्रकट) अरे पुरुष इन्हें छोड़ दो।

घटोत्कच—नहीं छोड़ने का।

भीमसेन—अरे ब्राह्मण अपने पुत्र को ले जाओ, हम स्वयं इसके साथ जाते हैं।

द्वितीय—नहीं, नहीं, आप न जायँ।

दै निज प्रानन को चुक्यों, गुरु जन रक्षा हेतु।
चिरजीवहु जग में युवक, तू गुण रूप समेत ॥४०॥

भीमसेन—आर्य ऐसा न कहो, मैं क्षत्री वंश की विभूति हूँ—ब्राह्मण तो और भी अधिक पूजनीय होते हैं इस लिये मैं ब्राह्मण के शरीर के बदले अपने शरीर को देना चाहता हूँ।

घटोत्कच—यह क्षत्री है इसीलिये इतनी अभिमान पूर्ण बातें

घटोत्कच—सो कैसे, झूठ बतलाते हो मेरे पिता का अपमान करते हो, इस बड़े वृक्ष को उखाड़ कर अभी इसे मारता हूँ?

(वृक्ष उखाड़ता है) अरे यह इससे भी मारे नहीं मरता है। क्या करूँ, क्या करूँ अच्छा समझ गया। इस पर्वत को उखाड़ कर प्रहार करता हूँ ?

कीन्हों शैल प्रहार मैं, याहि डारिहौं मारि।
भीमसेन—रोषित हूँ गजराज बन, हरि कर सकत विगारि॥४४॥

घटोत्कच—(प्रहार करके) अरे, यह इससे भी नहीं मरता अरे अब क्या करूँ, अच्छा, समझ गया।

पवन देव को पौत्र हूँ, भीम सुवन जग मांहि।
होहु सजग रण द्वन्द मंह, कोऊ मम सर नाहिं॥४५॥

(दोनों का द्वन्द युद्ध करना)

घटोत्कच—(भीमसेन को बाँधकर)

मम भुज बल से तो आप जाते कहाँ हैं।
गजसम युग-बाहू-पास में आ गये हो।

भीमसेन—(स्वगत) अरे, इसने तो मुझे पकड़ लिया, अरे, दुर्योधन, तुम्हारा शत्रु पक्ष बढ़ रहा है, अब अपनी रक्षा करो। (प्रगट) अरे पुरुष, सावधान हो जाओ।

सावधान हूँ, (बाहु बंधन को तोड़कर)

बस अहमिति छोड़ो जान ली शक्ति तेरी।
श्रम नहिं मम होता बाहु संग्राम में है॥४६॥

घटोत्कच—अरे, यह तो इससे भी मारे नहीं मरता, अब क्या करूँ, अच्छा समझ गया। माता के प्रसाद से मैंने माया पाश प्राप्त की थी उसी से बाँधकर इसे लिये जाता हूँ। जल कहाँ है, अरे, पर्वत थोड़ा सा जल हो, अच्छा, यह तो पर्वत से जल गिर रहा है।

(आचमन करके मंत्र जपता है) अरे पुरुष।

बाँधे माया पाश में, अब तुम सकत न जाय।
रज्जु-बद्ध-मख-इन्द्रध्वज, समतूं परत लखाय॥४७॥

(माया से बाँधता है)

भीम०—अरे, मैं तो माया-पाश में बँध गया, अब क्या करना चाहिये. मुझे महेश्वर के प्रसाद से पाया हुआ माया-पाश मोक्ष मंत्र भी

(दोनों घूमते हैं)

हिडम्बा—क्या, इसी मनुष्य को लाये हो ?

घटोत्कच—हाँ, माता जी, यह कौन है ?

हिडम्बा—अरे, क्या तुम्हें प्रमाद हो गया है, यह तो हमारे सौभाग्य हैं।

घटोत्कच—किसके सौभाग्य हैं ?

हिडम्बा—तुम्हारे और मेरे।

घटोत्कच—इसका प्रमाण क्या है ?

हिडम्बा—यही प्रमाण है, आर्य पुत्र की जय हो।

भीमसेन—(देखकर) अरे यह कौन है ? देवी हिडम्बे।

राज्य छांड़ि बन मँह सबै, घूमत हम असहाय।
करी कृपा बहु देवि तुम, दीन्ह्यो ताप नसाय ॥४६॥

हिडम्बा—यह क्या ?

(हिडम्बा कान में कहती है)

आर्य पुत्र यह बात है।

भीम—जाति की तो यह राक्षसी है, पर व्यौहार में तो कुछ और है।

हिडम्बा—अरे, प्रमादी ! अपने पिता का अभिवादन करो !

घटोत्कच—कौरव कुल कानन-धूमि-केतु घटोत्कच आप को अभिवादन करता है बालक की चपलता को क्षमा कीजिये।

भीम—आओ पुत्र, आओ, तुम्हारी अवहेलना भी प्यारी लगती है, (भेंटकर) कौरव कुल कानन-धूम-केतु के लिये तेरे पितृव्य पाण्डवों के हृदय उतकंठित हैं, हे पुत्र तुम परम बलशाली हो।

घटोत्कच—आपकी बड़ी कृपा है।

वृद्ध—अरे, यह घटोत्कच भीमसेन का ही पुत्र है ?

भीम—पूज्य, केशवदास का अभिवादन करो।

घटोत्कच—भगवन, मैं आपको अभिवादन करता हूँ।

वृद्ध—तुम्हारा गुण और यश तुम्हारे पिता ही का सा हो।

घटोत्कच—आपका आशीर्वाद।

वृद्ध—अरे वृकोदर ? तुमने हमारे वंश की रक्षा की, अब अपने कुल का उद्धार करो। हम लोग जाते हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

१	काव्य कलानिधि	३॥)	१	चित्ररेखा	२)
२	भारत-गीत	≡)	२	बाल नाटक-माला	।)
३	राष्ट्रभाषा	॥)·	३	बाल-कथा भाग २	।≡)
४	मैथिली लोकगीत	४)	४	बाल विभूति	≡)
५	पद्मावत पूर्वार्द्ध	१), १।)	५	वीर पुत्रियाँ	।≡)
६	स्त्री का हृदय	१॥)	६	तुलसी दर्शन	५)
७	नवीन पद्यसंग्रह	१।)	७	सरल नागरिक शास्त्र	४)
८	बिहारी-संग्रह	≡)	८	कृषि प्रवेशिका	१।)
९	सती कल्पलता की	॥)	९	विकास (नाटक)	॥≡)
१०	हिन्दी पर फारसी का प्रभाव	॥≡)	१०	हिन्दू-राज्य शास्त्र	५)
११	ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार	१।)	११	कौटिल्य की शासन-पद्धति	१।≡)
१२	समाचार पत्र शब्दकोष	१॥)	१२	गावों की समस्यायें	१)
१३	अकबर की राज्यव्यवस्था	३)	१३	मीराँबाई की पदावली	३)
१४	रसखान और उनका काव्य	।॥)	१४	भट्ट निबंधावली	१।), १॥)
१५	देव शब्द रसायन	२॥)	१५	बंगला-साहित्य की कथा	१॥)
१६	सरल शरीर-विज्ञान	।॥) १॥)	१६	शिशुपाल बध	२॥)
१७	प्रारम्भिक-रसायन	१।)	१७	ऐतिहासिक कथायें	।॥)
१८	सृष्टि की कथा	१॥)	१८	दमयन्ती स्वयंबर	॥)

नवीन पुस्तकें

१	गोरखबानी—स्व० डाक्टर पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल	३)
२	महावंश—भदन्त आनन्द कौसल्यायन	४)
३	भोजपुरी लोकगीत में करुणरस—श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह	६)
४	राजस्थानी लोकगीत—स्व० सूर्यकरण पारीक	१॥)
५	सामान्य भाषाविज्ञान—डा० बाबूराम सक्सेना	६)
६	काव्यप्रकाश—मम्मटाचार्य, अनुवादक स्व० हरिमंगल मिश्र	६)
७	कैलास और मानसरोवर—स्वामी प्रणवानन्द	१०)
८	भोजपुरी ग्राम गीत—श्री कृष्णदेव उपाध्याय	५)
९	अनुराग बाँसुरी—श्री चन्द्रबली पांडे एम० ए०	१॥)
१०	विचार विमर्श (निबंध-संग्रह)—श्री चन्द्रबली पांडे	२)
११	बाल इतिहास भाग १ तथा २—श्री भगवतशरण उपाध्याय	१।) १॥)